इकाई 4 पारंपरिक अर्थव्यवस्था : चीन और जापान

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरान्त आप जान सकेंगे कि

- परम्परागत चीनी अर्थव्यवस्था के घटक क्या थे,
- मिंग और चिंग काल के दौरान चीन की आर्थिक व सामाजिक स्थिति क्या थी,
- परम्परागत जापान में आर्थिक विकास की प्रक्रिया क्या थी,
- परम्परागत जापान की अर्थव्यवस्था के मुख्य घटक क्या थे,
- आर्थिक विकास का जापानी समाज पर क्या प्रभाव पड़ा, और
- कलाओं और संस्थाओं के विकास के परिणामस्वरूप जापान का आधुनिकीकरण किस प्रकार सम्भव हुआ।

4.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आपको परम्परागत चीन और जापान की आर्थिक स्थितियों से परिचित कराने का प्रयास किया गया है। परम्परागत चीन से अभिप्राय उस काल से है जो कि हमारे अध्ययन काल से पूर्व का काल है। प्रारम्भिक काल की आर्थिक स्थिति के बारे में संक्षिप्त चर्चा करने के उपरान्त इस इकाई में उन विभिन्न घटकों की चर्चा की गई है जिन्होंने मिंग-चिंग काल की अर्थव्यवस्था को दिशा प्रदान की। इसके साथ ही यह भी चर्चा की गई है कि उस काल के समाज का इस आर्थिक विकास के प्रति क्या दृष्टिकोण था। इसी प्रकार जापान के सन्दर्भ में न केवल प्रारम्भिक अर्थव्यवस्था के रूपों का वर्णन किया गया है वरन तोकुगावा काल की अर्थव्यवस्था और समाज की स्थिति का भी वर्णन किया गया है।

सर्वप्रथम हम चीन की अर्थव्यवस्था की चर्चा करेंगे।

4.2 चीन की परम्परागत अर्थव्यवस्था के घटक

एक अविकसित अर्थव्यवस्था में अक्सर परम्परागत और आधुनिक घटकों में अंतर करना एक कठिन कार्य है। परम्परागत आर्थिक क्रियाओं का सामान्यतः उन क्षेत्रों या विशेषताओं से मतलब लगाया जाता है जो कि देशी तौर पर विकसित हुई हैं। चीन की परम्परागत अर्थव्यवस्था का विकास एक धीमी और सामान्य प्रक्रिया के अन्तर्गत हुआ। इसमें संस्थाओं, उत्पादन तकनीकों और वितरण आदि का विकास एक लम्बी अवधि के दौरान हुआ। इन संगठनात्मक गतिविधियों में यकायक या लगातार कोई परिवर्तन नहीं हुए। परन्तु चीनी रहन-सहन के तौर तरीके, जीवन के प्रति दृष्टिकोण और कार्य करने के तरीकों ने समय-समय पर इनको प्रभावित अवश्य किया।

दूसरी तरफ हम यह पाते हैं कि चीन में आधुनिक आर्थिक प्रवृत्तियां बाहर से ही आईं । यह नए तौर तरीकों के साथ विकास की ओर बढ़ता हुआ कदम था। धीरे-धीरे प्रवृत्तियाँ चीन की आर्थिक विकास की प्रक्रिया में समा गई। यहाँ यह जिक्र करना आवश्यक हो जाता है कि चीन प्राकृतिक साधनों की दृष्टि से एक अत्यंत ही धनी देश है। वहां के अत्यधिक भू-विस्तार, उपजाऊ मैदान, वन सम्पदा, खनिजों और कोयले के विशाल भंडार और जल साधनों आदि ने आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। परन्तु चीन में आर्थिक विकास विभिन्न अवस्थाओं से गुजरा जिसमें उन्नति और अवनति की दशाएं शामिल थीं। चीन की परम्परागत अर्थव्यवस्था के प्रमुख घटक कृषि, हस्तशिल्प, व्यापार और देशी परिवहन व सेवाएं आदि थे जिनकी चर्चा हम आगामी खण्डों में करेंगे।

4.3 कृषि

जैसा कि हम पहले चर्चा कर चुके हैं (इकाई-2) चीन मुख्यतः एक कृषि समाज देश रहा है। वहाँ निरंतर कृषि का विकास हुआ जिससे कृषि ढांचे और सम्बन्धों में भी परिवर्तन होते रहे। कृषि में उत्पादन सम्बंध विभिन्न अवस्थाओं से गुजरे जैसे शिकारी समुदायों से दास समुदायों में और अन्ततः सामंतवादी ढांचे में। इन सभी अवस्थाओं ने कृषि सम्बंधों पर अपनी छाप अवश्य छोड़ी। भू-स्वामित्व के सन्दर्भ में दो नमूने (पैटर्न) उभर कर आए—व्यक्तिगत और सामूहिक। भूमि के व्यक्तिगत स्वामित्व के द्वारा जमींदारी प्रथा का उद्भव हुआ। सामूहिक स्वामित्व के नमूने के अन्तर्गत शाही, सरकारी, सैनिक और मठों की भूमि शामिल थी। भू-स्वामित्व के ये सभी नमूने वास्तव में सामन्तवादी ढांचे के अन्तर्गत क्रियाशील और विकसित हुए। राज्य और जमींदार दोनों ही के द्वारा विभिन्न प्रकार के कर थोपे जाते थे और सरकारी नियम जमींदारों के हित में थे। उदाहरण के लिए मठाधीश जमींदारों को न तो कोर्ट कर ही देना होता था और न ही श्रम सेवाएं। यह स्थिति तब थी जबकि उनके पास अत्यधिक भूमि, सम्पत्ति और साधन मौजूद थे। बहरहाल हम यहां पर विभिन्न चरणों के कृषि संबंधों में व्याप्त पेचीदगियों में नहीं जा रहे हैं। इतना अवश्य है कि किसी भी अवस्था में कृषि-संबंध चाहे कैसे भी रहे हों कृषि तकनीक में कोई न कोई सुधार अवश्य हुआ। विशेषतौर से 8वीं से 13वीं शताब्दी में कृषि क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए जिनके बारे में हमें अनेक स्रोतों से जानकारी हासिल होती है। उदाहरण के लिए :

- उत्तरी वी (Wei) काल में चुस्जुशीह् ने एक पुस्तक, द *मैन्युअल आफ इम्पौरटेन्ट आर्ट्स फौर द पिपल,* लिखी थी। इसमें कृषि सम्बन्धी अनेक क्रियाओं का जिक्र था जैसे कि बुआई, कृषि औजार, पशुपालन, स्थानीय दशाओं में खेती और अधिक उपज प्राप्त करने के तरीके आदि। उसने लिखा : "अच्छा यह है कि छोटे क्षेत्र से अच्छी उपज ली जाए बजाए इसके कि बड़े क्षेत्र से बुरी उपज।"
- लू यू (733-804 ई.) ने अपनी पुस्तक द *बुक आफ टी* में चाय की खेती और चाय बनाने के तरीकों की चर्चा की।
- 1149 ई. में चान फू ने अपनी पुस्तक *एग्रीकल्चर* में धान की खेती की तकनीक की चर्चा की।
- वर्ष 1273 में युआन सरकार ने खेती सम्बन्धी आज्ञाप्तियां जारी की जिनमें रेशम के कीड़ों की विधि समझाई गई थी।
- इसी प्रकार वांग चैन ने अपनी पुस्तक में कृषि औज़ारों और क्रियाओं को चित्रों द्वारा समझाया (1295-1300 ई.)

कृषि के तरीकों के विकास के अतिरिक्त कृषि औज़ारों में भी सुधार हुए। उदाहरण के लिए लोहे की ढलाई के लिये जलशक्ति का प्रयोग होने से लोहे के कृषि औज़ारों के उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई।

इसी प्रकार सुई-तांग काल में एक नए प्रकार का हल बनाया गया जिसके ग्यारह हिस्से थे और उनको अलग-अलग प्रकार की गहराई प्राप्त करने के लिए ऊपर नीचे किया जा सकता था।

प्रारम्भिक मिंग शासन के दौरान अधिकाधिक भूमि को जुताई के काबिल बनाने के प्रयास किए गए। उदाहरण के लिए राजा चू यूआन चांग ने आदेश जारी किए थे कि सीमा पर तैनात सिपाही अपना 70 प्रतिशत ध्यान कृषि में और 30 प्रतिशत सुरक्षा की ओर लगाएं। जबकि भीतरी प्रदेश में तैनात सिपाही यही कार्य 80:20 के अनुपात में करें। परन्तु मिंग सरकार ने भी किसानों पर करों में वृद्धि ही की।

मिंग शासन में जमींदारी प्रथा (मेनोरियल) ने ही महत्ता ग्रहण की। इसकी आधारभूत विशिष्टता यह थी कि किसान जमींदार से जोतने के लिये जमीन लेता था और बदले में उसे कुछ निश्चित राशि और सेवाएं देनी होतीं थीं। उदाहरण के लिए उसे अनेक दिनों तक जमींदार के खेत जोतने होते थे। लगभग 15वीं शताब्दी तक यही व्यवस्था प्रभावशाली रूप में लागू रही। लेकिन मिंग वंश के पतन में किसान विद्रोहों का काफी हाथ था। इनमें से कुछ मुख्य विद्रोह थे :

- 1420 में शातुंग में एक किसान औरत तांग साई के नेतृत्व में हुआ विद्रोह,
- 1448 में चीजीयांग प्रांत मं येहत्सुंग लिन के नेतृत्व में हुआ विद्रोह,
- 1448 में फ्युजियान प्रान्त में तेंग माओ ची ने स्वयं को किसानों का राजा घोषित कर सशस्त्र विद्रोह किया।
- 1627 से प्रारम्भ शांशी प्रांत में हुआ किसान विद्रोह आदि।

वास्तव में सामंतवादी शोषण, आकाल और बाढ़, सभी का कृषि पर प्रभाव पड़ता रहा।

चिंग काल में जुताई की भूमि में धीरे-धीरे वृद्धि हुई। उदाहरण के लिए 1661 में 82,350,000 एकड़ जमीन जोती जा रही थी। 1812 तक यह बढ़कर 116,500,000 एकड़ हो गई। कृषि विकास धान और नकदी फसलों के चारों ओर केन्द्रित रहा। इस काल में भी भूमि कर सबसे बड़ा कर बना रहा।

इस समय कृषि मजदूरों का भी बाजार विकसित हुआ। कृषक मजदूरों की एक बड़ी संख्या मजदूरी लेकर जमींदारों के लिए साल भर के लिए, दिहाड़ी पर या एक दौर तक कार्य करती थी। यद्यपि ऐसा कुछ ही क्षेत्रों में हुआ परन्तु इससे कई मजदूर सामंती चंगुल से मुक्त हो अपने श्रम को खुले तौर पर बेचने लगे।

भू-स्वामित्व के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण कदम नए प्रकार के जमींदारी वर्ग का उद्‌भव था जिसमें कि सरकारी कर्मचारी, कुलीन और व्यापारी शामिल थे।

चिंग काल में भी अनेक किसान विद्रोह हुए। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण 1796-1804 के दौरान का ग्रेट व्हाइट लोटस विद्रोह था। परन्तु केवल 1850 के दशक में जाकर ही ताइपिंग विद्रोह में एक नवीन कृषि ढांचे के निर्माण का प्रयास किया गया (इकाई 13 देखें)।

बोध प्रश्न 1

1) लगभग पाँच पंक्तियों में कृषि के क्षेत्र में हुई तकनीकी विकास की चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

2) निम्न में से कौन से वक्तव्य सही या गलत हैं? √ या × का चिन्ह लगाएं :

   i) मठाधीश जमींदारों को भारी कर देना पड़ता था।

   ii) लू यू ने रेशम के कीड़ों के उत्पादन पर पुस्तक लिखी।

   iii) चान फू की पुस्तक धान की खेती से सम्बन्धित थी।

iv) तांग साई एक औरत किसान नेता थी।

v) चीन में सामंतवाद का बोलबाला था।

3) मिंग काल के कुछ किसान विद्रोह बताइए।

....

....

....

....

....

....

4.4 हस्तशिल्प उद्योग

चीनी हस्तशिल्प, विशेषतौर से शांग काल (1523-1027 ई. पू.) से, उच्च कोटि के रहे हैं। उदाहरण के लिए खुदाइयों में सुन्दर बर्तन और तांबे की वस्तुएं प्राप्त हुई हैं। इस प्रकार की वस्तुएं निर्मित होती रहीं। हस्तशिल्प के महत्वपूर्ण क्षेत्र थे :

- बर्तन बनाना
- पोर्सिलीन (चिन्नी मिट्टी) और लैक्युवेअर (लाख के रोगन युक्त) बर्तन
- तांबे के बर्तन, शस्त्र और औजार, आदि
- कताई और बुनाई
- कागज बनाना

इसी प्रकार नमक बनाना, लोहा ढालना आदि भी विशिष्ट शिल्प के रूप में विकसित हुए।

परम्परागत हस्तशिल्प उद्योग का विकास कृषि के एक उपरोजगार के रूप में हुआ। क्योंकि कृषि कार्य की प्रकृति मौसम पर आधारित थी इसलिए किसानों को हस्तशिल्प में भी व्यस्त रहने का पर्याप्त समय मिलता था। धीरे-धीरे स्वतंत्र हस्तशिल्पियों का भी ग्रामीण और शहरी दोनों ही इलाकों में उद्‌भव हुआ। परन्तु उत्पादन विधियाँ मुख्यतः परम्परागत ही रही जिनमें कि साधारण औज़ारों का ही प्रयोग होता था। पर अब दस्तकार ऐसा उत्तम समान भी बनाने लगे थे जिनके लिए दूर-दूर तक बाजार उपलब्ध थे। उदाहरण के लिए चीन में बनी ज़री (Brocade) की मांग रोम तक में थी।

विभिन्न समय पर कुछ नवीन उपलब्धियाँ भी हुई। जैसे तीन राज्यों के काल में करघे को चलाने में सुविधा हुई जबकि उसके पैडल 60 से घटाकर 12 किए गए। इसी प्रकार तांग काल में जो कागज बनता था वह अपनी समतलता और उत्तमता के लिए कई देशों में प्रसिद्ध था। सुंग और युआन काल मे उच्च कोटि के पोर्सलीन का सामान बनता था। कुछ मशहूर भट्टे हीनान काईफैंग जैसे स्थानों पर केन्द्रित थे। इस क्षेत्र में मिंग-चिंग काल में नीला फूलदान बहुरंगी फूलदान सर्वाधिक प्रसिद्ध उत्पाद थे।

तांग काल में नमक उद्योग का विकास हुआ था। चिंग काल तक हजारों मजदूर नमक उद्योग से जुड़े हुए थे। लोहा पिघलाने और ढालने के क्षेत्र में भी अनेक उपलब्धियां हुई और मिंग काल में इस्पात बनाने के नवीन तरीके अपनाए गए। लोहा ढालने और पिघलाने के लिए ईंधन के तौर पर कोयले का प्रयोग किया जाने लगा था। जस्ता (Zinc) पिघलाने की प्रक्रिया अत्यंत ही कठिन मानी जाती है परन्तु चीन में यह 15वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों से ही प्रचलन में थी और बाद में यूरोप तक में अपनाई गई।

नक्काशी युक्त लकड़ी के ठप्पों से छपाई का कार्य तांग काल से प्रारंभ हो चुका था। मिंग चिंग काल में तांबे और टिन आदि के टाइप से छपाई की जाने लगी। छपाई की सामान्य प्लेट के अतिरिक्त अब बहु-छपाई प्लेट का भी प्रयोग होने लगा।

कताई और बुनाई एक सहायक पेशे के रूप में मौजूद था परन्तु मिंग काल से ये एक स्वतंत्र उद्योग के रूप

में उभर कर आने लगे। उदाहरण के लिए मिंग काल में अनेक बुनकर धनी व्यापारियों के करघों पर मजदूरी पर कार्य करते थे। वानली के काल के बारे में एक रपट में कहा गया था कि :

> हंगचाओ में जिन दस्तकारों के अपने मालिक थे उन्हें प्रतिदिन मजदूरी मिलती थी। जिनके नियमित मालिक नहीं थे वे पुल पर सुबह खड़े होकर इंतजार करते थे कि उनके नाम बुलाए जाएं।

यह इस तथ्य का द्योतक है कि मजदूरी का बाजार बन चुका था। अनेक धनी बुनकरों ने अपने करघों की संख्या बढ़ा दी थी जिससे और बुनकरों को दिहाड़ी देकर अपना उत्पादन बढ़ा सकें। कपड़े के व्यापारी उत्पादन हेतु कच्चा माल, दस्तकारों और छपाई करने वालों को वितरित करने लगे थे। इस प्रकार श्रम विभाजन के द्वारा उत्पादन पूर्ण किया जाता था। इस प्रकार एक तरफ तो धनी बुनकर कार्यशालाओं के स्वामी बनने लगे थे और दूसरी तरफ व्यापारी ठेके पर कपड़े का उत्पादन करवाने लगे थे। परन्तु ऐसा केवल दक्षिणी-पूर्वी चीन में ही हो रहा था। तब भी यह चीन में एक प्रकार के पूंजीवाद के प्रारम्भ का द्योतक है।

इसी के साथ एक नए प्रकार का वर्ग संघर्ष भी उभर रहा था। करघों पर सरकारी टैक्स बढ़ाए जाने के विरुद्ध आवाजें उठने लगीं थीं। उदाहरण के लिए सुचाओ में सोलहवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में अनेक मजदूरों ने कर निदेशक द्वारा करघों पर कर बढ़ाए जाने के विरोध में हड़ताल की।

खान उद्योग में भी इसी प्रकार की घटनाएं देखने को मिलीं। 1603 में शीशान के खान मजदूरों ने खान निदेशक के बुरे बर्ताव के विरुद्ध पीकिंग में जाकर प्रदर्शन किया। 1606 में यूनान के कराधिकारी का दफ्तर खान मजदूरों ने जला दिया। बदले में कराधिकारी यांगजुंग ने एक हजार मजदूरों को मार डाला । इससे मजदूर और उत्तेजित हो उठे और उन्होंने यांग के दो सौ समर्थकों को मार डाला। ये घटनाएं इस बात की द्योतक हैं कि मजदूरों में जागृति फैल रही थी।

यद्यपि चीनी उद्योगों का विकास आधुनिक तौर तरीकों पर नहीं हुआ (जैसा कि यूरोप में हुआ था) परन्तु हस्तशिल्प उद्योग और कार्यशालाएं चीन की परम्परागत उद्योगों की उच्चतम अवस्था को इंगित करते हैं।

4.5 यातायात के साधन

किसी भी देश के आर्थिक विकास में यातायात के साधन महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। परम्परागत चीन में यातायात के प्रमुख स्रोत नदियां और नहर थीं। चीन में चिन-हान काल से ही जल संरक्षण परियोजनाओं का विकास संचालन कृषि और पशुपालन के सन्दर्भ में हुआ था। इस काल में खोदी गई कुछ महत्त्वपूर्ण नहरें थीं :

- लियु-चू नहर
- त्साओ-यू नहर जो कि शू-पो की देख रेख में बनाई गई थी। शू-पो जल संरक्षण क्षेत्र का विशेषज्ञ था।
- 69 ई. में वौंग-चिन की देख रेख में ह्वांगी नदी को नियन्त्रित किया गया था।

इन सभी परियोजनाओं में अनेक मजदूर कार्यरत रहे। इनकी पूर्ति से अनाज के परिवहन में सुधार हुआ।

तीन राज्यों के काल में एक अज्ञात लेखक ने अपनी पुस्तक में 137 जलमार्गों का उल्लेख किया था। छठी शताब्दी में ली-ताओ-युआन ने 1252 और जलमार्गों को अपनी पुस्तक में अंकित किया। छठी और बारहवीं शताब्दी के मध्य सरकारी पहल पर अनेक नहरें खोदी गई। यह इस उद्देश्य से किया गया कि उत्तरी चीन की प्रमुख नदियों को जोड़ा जा सके। इस क्षेत्र में सबसे बड़ी उपलब्धि ग्रैंड कैनाल का बनाया जाना थी। 600 मील लम्बी यह नहर हैंकचाओ से शातुंग प्रांत तक जाती थी। यातायात में सुधार के साथ-साथ नहरों के निर्माण ने सिंचाई में भी मदद की। और इनका निरंतर विकास होता रहा।

सोलहवीं शताब्दी में पान-ची-शुंग ने ह्वांगी और हुयाई नदियों पर अपने निरीक्षण में जल संरक्षण का कार्य करवाया। इस क्षेत्र में उसने दो पुस्तकें भी लिखीं :

- *दो नदियों पर मेरे विनम्र विचार*, और
- *नदी नियंत्रण की रूपरेखा* ।
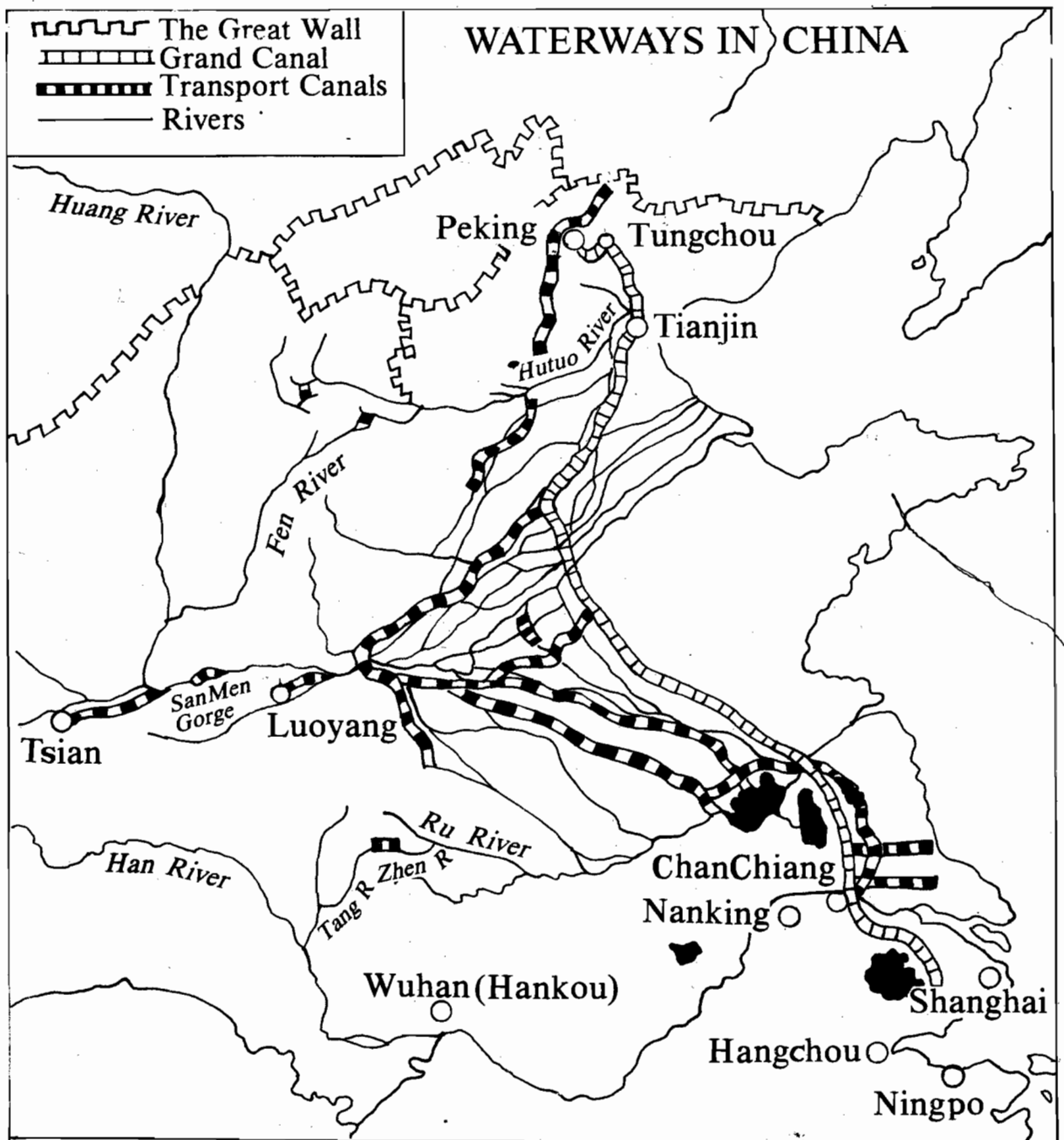
नक्शा-5 : चीन के जल मार्ग

मिंग-चिंग काल में नदी यातायात सुधारने के व्यापक प्रयास किए गये परन्तु इसके प्रशासन में व्यापक भ्रष्टाचार भी फैला। 1811 में यह माना गया कि जल नियन्त्रण के बजट में से आधी से अधिक धनराशि भ्रष्टाचार में लुप्त हो जाती थी। वास्तव में जल नियंत्रक के पद पर सबसे अधिक रिश्वत मिलती थी और इस विभाग में कदम-कदम पर भ्रष्टाचार था।

जहाँ तक स्थल मार्गों का सवाल है, तांग और सुंग सरकारों ने न केवल पुराने मार्गों को बनाए रखा वरन् उनमें सुधार भी किए। मिंग-चिंग काल में भी स्थिति यही रही और रास्तों को डाकुओं से मुक्त कराने का भी प्रयास किया गया।

समुद्र यातायात भी प्राचीन काल से चला आ रहा था और उन्नीसवीं शताब्दी तक तटीय गांवों और बड़े बन्दरगाहों की स्थापना हो चुकी थी।

इस प्रकार यातायात के साधनों में सुधार होने से एक राष्ट्रव्यापी बाजार की स्थापना हुई और व्यापार को प्रोत्साहन मिला।

4.6 व्यापार और वाणिज्य

प्राचीन चीन में—विशेष तौर से चाओ काल में—व्यापार पर मुख्यतः कुलीनों या राज्याधिकारियों का ही नियंत्रण था। परन्तु वैरिंग स्टेटस के काल तक व्यापारी एक पृथक सामाजिक वर्ग के रूप में स्थापित होने लगे थे। इस काल के एक व्यापारी, पाई-कई, के बारे में जो उद्धरण मिलता है उसके अनुसार वह अच्छी फसल के काल में अनाज खरीदता और रेशम व लैक्युवेयर (लाख के पालिश के बर्तन) बेचता था। दूसरी तरफ बुरी फसल के काल में वह अनाज बेचता और कपड़ा खरीदता था। इस प्रकार उसने अत्यधिक मुनाफा कमाया।

प्राचीन रेशम मार्ग काफी प्रसिद्ध था और इस मार्ग के रास्ते चीनी व्यापारी प्रथम शताब्दी से मध्य एशिया और पाश्चात्य जगत से व्यापार कर रहे थे। तांग काल आते-आते चीन में बने सामान की अरब के बाजारों, जापान और अन्य देशों में खासी मांग थी। व्यापार की सबसे महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ इस समय रेशम के वस्त्र और चीनी मिट्टी के बर्तन थे। इस काल में व्यापार के लिए *"फी चीएन"* का उद्‌भव हुआ। फी चीएन का अर्थ उड़ने वाला धन है और यह एक प्रकार का बिल आफ एक्सचेंज (हुण्डी) था।

सुंग, चीन और युआन काल में चीन में कागज़ी मुद्रा का प्रयोग होने लगा था।

व्यापार के विस्तार से शहरीकरण और बाजारों के विस्तार को बढ़ावा मिला। उदाहरण के लिए हानचाओ में व्यापारिक गतिविधियां रात में भी चलती थी और शहर में 20 से अधिक लाइसैन्सशुदा दुकानें (Pawn Shops) थीं। युआन शासन के दौरान मार्कोपोलो ने दाद की व्याख्या एक ऐसे शहर के रूप में की है जहाँ रेशम से भरे 1000 ठेले रोज भेजे जाते थे।

कभी-कभी व्यापारी करों में वृद्धि पर विरोध भी प्रकट करते थे। उदाहरण के लिए 1599 में शांतुंग प्रांत में लिनचिंग शहर के व्यापारियों ने कर निर्देशक के विरुद्ध हड़ताल कर दी और उसका दफ्तर जला डाला। व्यापारियों ने स्वयं को स्थानीय संघों (*तुग-शीयांग हुई*) में गठित किया परन्तु 19वीं शताब्दी तक भी वे अपने हितों की सुरक्षा और शक्ति का प्रदर्शन जम कर नहीं कर पाए।

सामाजिक वर्गीकरण की दृष्टि से व्यापारियों को हीन दृष्टि से देखा जाता था और सरकार द्वारा उन पर कई प्रकार के नियंत्रण लगाए जाते थे : उदाहरण के लिए :

- नमक बनाने और बेचने के लिये लाइसैंस लेना पड़ता था,
- चावल में व्यापार राज्य द्वारा लागू की गई अनाज शुल्क व्यवस्था द्वारा नियन्त्रित था, और
- शाही कारखानों में निर्मित रेशम और मिट्टी के बर्तनों के व्यापार पर भी राज्य का सीधा नियंत्रण था।

वास्तव में विदेशी व्यापार, कोहौंग व्यापार व्यवस्था और व्यापार पर सरकारी नियंत्रणों की चर्चा हम इकाई 6 में करेंगे।

4.7 पूंजीवादी विकास में बाधाएं

उत्तरकालीन मिंग और चिंग काल में प्रारम्भिक पूंजीवाद विकास के लक्षण उभर कर सामने आने लगे थे। परन्तु पूंजीवाद के सामान्य विकास को कई कारणों से धक्का लगा। यहाँ हम संक्षिप्त में उनमें से कुछ की चर्चा करेंगे।

1) एक लम्बी अवधि तक चीन की अर्थव्यवस्था सामन्तवादी ढांचे में अपनी मांगों को स्वयं ही पूर्ण करती रही थी। परन्तु इसका उत्पादन प्रक्रियाओं पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उदाहरण के लिए हम देख ही चुके हैं कि किस प्रकार जमींदार किसानों का शोषण करते थे। इसके परिणामस्वरूप उत्पादकता में किसी भी प्रकार की वृद्धि केवल जमींदार के लिए ही लाभकारी थी और किसानों को इसमें कोई हिस्सा नहीं मिलता था। किसानों द्वारा किया गया उत्पादन, चाहे वे अनाज हो या हस्तशिल्प की वस्तुएं, केवल दैनिक परम्परागत घरेलू मांगों की पूर्ति तक ही सीमित था। इस प्रकार परम्परागत घरेलू ढांचे पर बल बाजार सम्बन्धों और व्यापार के दायरे को संकुचित करता रहा। इसके परिणामस्वरूप औद्योगिक पूंजीवाद के विस्तार में बाधाएं आयीं।

2) चीन में शिल्पसंघ कड़े नियमों में कार्य करते थे जो कि शिल्पकारों पर नियंत्रण रखने के लिये सामन्तवादी सरकार द्वारा लगाए जाते थे। कच्चे माल के वितरण और बने हुए उत्पादों के श्रेणीकरण से संबधित नियम बाजार में प्रतिस्पर्धा को रोकते थे जिससे पूंजीवादी विकास पर अंकुश लगता था।

3) हस्तशिल्प, कपड़े और खान उद्योग के प्रति जो दृष्टिकोण सामन्तवादी सरकार ने अपनाये उससे भी उत्पादन के पूंजीवादी स्वरूपों के विकास में रुकावट आयी। उदाहरण के लिये चिंग सरकार ने चाय, नमक और शराब पर भारी कर लगाए, उत्पादों को अक्सर कम दामों पर खरीदा और व्यापारियों और वस्तुओं के स्वतंत्र आवागमन पर रोक लगाई। कई बार खानों में काम को मनमाने ढंग से बंद कर दिया जाता था जबकि इस उद्योग में मुनाफा ही हो रहा था। वास्तव में ऐसा सरकार इस भय से करती थी कि कहीं अधिक समय साथ रहने के कारण खान मजदूर सरकार के लिए समस्या उत्पन्न न कर दें।

4) जैसा कि हम इकाई-2 में जिक्र कर चुके हैं व्यापारी प्रतिष्ठा की दृष्टि से चीनी समाज में सबसे हीन माने जाते थे। सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए उन्होंने बड़े पैमाने पर जमीन खरीदने में धन लगाया जिससे उन्हें भूपति का दर्जा मिल सके। इस प्रकार एक बड़ी धन राशि जो कि व्यापारिक और औद्योगिक क्षेत्र के विकास में भूमिका निभा सकती थी, दूसरी दिशा में लुप्त हो गई।

5) भूमि खरीदना और महाजनी में धन लगाना लाभकारी व्यवसाय समझे जाते थे। इस प्रकार धन के औद्योगिक पूंजी में परिवर्तित होने में रुकावटें आयीं।

6) मिंग-चिंग काल में व्यापार पर लगाए गए प्रतिबन्धों के कारण कई व्यापार योग्य वस्तुओं के उत्पादन पर भी बुरा प्रभाव पड़ा।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यद्यपि सामंतवादी व्यवस्था में दरारें उत्पन्न होने लगी थी परन्तु वह सामन्तवाद का प्रभाव ही था जिसके कारण चीन में पूंजीवाद के विकास के रास्ते में अवरोध उत्पन्न हुए।

बोध प्रश्न 2

1) किस उद्योग में स्वतंत्र श्रम बाजार का उदभव हुआ? उस उद्योग की मुख्य विशेषताएं बताएं। लगभग 10 पंक्तियों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) लगभग 10 पंक्तियों में नहर-व्यवस्था की महत्ता बताइए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3) चीन में पूंजीवाद के विकास में जो गतिरोध उत्पन्न हुए उनकी चर्चा लगभग 15 पंक्तियों में कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

4.8 जापानी अर्थव्यस्था

जापानी द्वीप समूह में मानव लगभग 10,000 ई.पू. से बसने लगे थे। परन्तु इनके बारे में अधिक जानकारी नहीं है। जापान के प्रारम्भिक मानव मुख्यतः शिकार और भोजन इकट्ठा करके अपना निर्वाह करते थे। कृषि अवस्था काफी बाद में जाकर ही सम्मुख आई। जोमोन काल (यह नाम उस काल के विशेष बर्तनों के कारण दिया गया है) के अंतिम वर्षों में धान की खेती क्युश क्षेत्र में एशिया की मुख्य भूमि से आई। प्रारम्भ में धान तालाबों के किनारे या सूखी क्यारियों में बोया जाता था।

यायोई काल में धान की खेती का विस्तार हुआ। इस काल की कलाकृतियों में धान कूटने और गोदामों में रखने के चित्र अंकित मिलते हैं। इस काल से धान की खेती ने न केवल एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक भूमिका

अदा की वरन् उसने सहकारिता के व्यवहार को भी सशक्त किया। जल संसाधनों और श्रम को परस्पर बाँटने की आवश्यकता ने ग्रामीण समुदायों को जन्म दिया। क्योंकि जापान में समतल मैदानों की कमी थी इसलिए उठे हुए खेत (जैसे कि पहाड़ों पर देखने को मिलते हैं) बनाए गए और चावल जापानियों के भोजन का प्रमुख अंग बना।

आरम्भिक जापानी समाज पितृसत्तात्मक गोत्रों में बँटा था। प्रत्येक गोत्र व्यावसायिक गुटों पर निर्भर था जो कि वंशानुगत शिल्पसंघों का रूप लेने लगे थे। जापानी में इन्हें *बी* या *तोमो* कहा जाता था। इनमें शस्त्र बनाने वाले, कुम्हार, जुलाहे, लकड़हारे और मछेरे आदि शामिल थे। अतः जापानी सभ्यता के उद्‌भव काल में ही कई ऐसी आर्थिक क्रियायें जो कि आगे तक बनी रहीं शामिल थीं।

4.8.1 चीनी प्रभाव

चीन में जो सुधार हुए थे आठवीं शताब्दी में उन्हें जापान में एक मॉडेल मानकर लागू किया गया। इससे पितृसत्तात्मक गोत्र समाज में एक अभिजात वर्ग में परिवर्तित हो गए। परन्तु जमीन पर व्यक्तिगत स्वामित्व की समाप्ति का दूरगामी प्रभाव पड़ा। जमीन पर स्वामित्व का अधिकार अब केवल शाही सत्ता के पास था। इस वजह से जमीन और जनसंख्या का सर्वेक्षण प्रारम्भ हुआ। इस सर्वेक्षण में कठिनाइयां भी सामने आईं जैसे भूमि का समतल न होना और कई क्षेत्रों में भूस्वामित्व की धारणाओं का स्पष्ट न होना आदि। जो नई व्यवस्था लागू की गई उसे *कू-बन-दीन* कहा गया। इसमें प्रत्येक पुरुष को 2000 वर्ग मीटर जमीन और प्रत्येक स्त्री को इसका लगभग 2/3 खेती के लिये दिया गया। इस पर लगाए गए कर धान, श्रम या अन्य उत्पादों के रूप में दिए जाते थे।

इस प्रकार चीन के प्रशासनिक 'मॉडेल' को एक ऐसे समाज में डाला गया जिसमें बहुत कम व्यापार मौजूद था और कृषि भी अपरिष्कृत अवस्था में ही थी।

शाही सत्ता ने निरंतर राजस्व में वृद्धि का प्रयास किया और इसके लिए किसानों को और अधिक भूमि जोतने के लिए प्रेरित किया। 722 ई० में एक आदेश दिया गया कि $2\frac{1}{2}$ लाख हैक्टेयर भूमि को खेती योग्य बनाया जाए। यह संख्या वास्तव में उस समय लगभग पूर्ण जुताई की जा रही भूमि के बराबर थी। कुछ क्षेत्रों में कर में छूट दी गई और लोहे के औजार भी उपलब्ध कराए गए। इस समय फावड़ा और कुदाल मुख्य औजार थे। टोडाजी जैसे बड़े मंदिरों ने भी कार्य में सहयोग किया। सिंचाई के साधनों का भी विकास किया गया। परन्तु अनेक कारणों वश *कू-बन-दीन* व्यवस्था सफल न हो पाई और सामन्तवादी व्यवस्था का विकास हुआ।

समस्याओं के बावजूद अर्थव्यवस्था का विकास होता रहा। 708 में तांबे की जानकारी के उपरान्त मुद्रा के रूप में उसका प्रयोग प्रारम्भ हुआ और एक मुद्रणालय भी स्थापित किया गया। अब चावल और वेतन भी मुद्रा के द्वारा मापे जाने लगे। 760 के बाद से सोने के सिक्कों का प्रचलन हुआ और तांबे, चांदी और सोने के सिक्कों के मध्य विनिमय दर भी तय की गई।

हीयेन काल में (784-1185 श. प्र.) में कृषि-भूमि का विस्तार हुआ। परन्तु जमींदारियों से अब लगान शाही सत्ता द्वारा इकट्ठा नहीं किया जाता था। उसका स्थान अब उन लोगों ने ले लिया था जो कि जमींदारियों *(शोइन)* पर नियंत्रण स्थापित किये हुए थे। राजकीय दरबार की शक्तियों का प्रयोग अब सैनिक परिवार और मंदिर करने लगे थे। इस प्रकार 902 तक *कू-बन-दीन* व्यवस्था के आधीन भूमि का वितरण बन्द कर दिया गया और *शोइन* यानी जमींदारियों की संख्या बढ़ने लगी।

हीयेन काल के दस्तकार कुलीनों के लिए सामग्री बनाते रहे। और वे सरकारी कार्यशालाओं में कार्यरत थे। उदाहरण के लिये कागज निर्माण का विस्तार हुआ और अप्रैल और जुलाई के मध्य औसतन एक मजदूर प्रतिदिन 196 शीट बनाता था। इसी प्रकार सुनार चांदी ढालने और पोलिश का कार्य करते थे। दसवीं शताब्दी तक व्यवसायिक शिल्पकारों का उद्‌भव हो चुका था। उनको निश्चित तनख्वाह मिलती थी और उन्हें उसके बदले कितना उत्पादन करना होता था यह भी तय कर दिया जाता था। यह व्यवस्था एक लम्बे काल तक प्रचलित रही।

4.8.2 शोइन और योद्धाओं का उद्‌भव

शोइन या जमींदारियां ऐसे क्षेत्र थे जिनके मालिकों ने सरकार की भूमिका और वित्तीय अधिकार हासिल कर लिए थे। कुछ शोइन बौद्ध मन्दिरों को दिए गए थे और कुछ पर स्वयं सम्राट का नियंत्रण था। ग्यारहवीं शताब्दी तक राज दरबार अपने अधिकार की सभी भूमि खो चुका था। तेरहवीं शताब्दी आते-आते सारा

जापान लगभग 5000 *शोइन* में बंटा हुआ था। कई मालिकों के बहुसंख्यक जोत भी थे। इस व्यवस्था ने सरकारी ढाँचे का रूप ले लिया जो कि *तैईहो* के नियम के विपरीत था। अब जमींदारों और किसानों के मध्य सम्बन्ध उनके आपसी समझौते पर निर्भर थे। किसान को अब जो भी प्राप्त होता था उसे वह तनख्वाह न समझकर ऐसी राशि मानता था जो जमींदारों को व्यक्तिगत लाभ कराने के बदले में उसे मिलती थी। इस प्रकार इन दोनों के मध्य सम्बन्धों ने व्यक्तिगत स्वरूप ले लिया।

कामाकूरा बाकुफू ने अपनी शक्ति व्यक्तिगत वफ़ादारी के ढांचे पर आधारित की। इसके साथ उसने प्रांतों में, जहां विभिन्न व्यवस्थाएं प्रचलित थीं, एक भूमि व्यवस्था और प्रशासन लागू करने का प्रयास किया। उदाहरण के लिए इसके अंतर्गत बेकार पड़ी भूमि को जोत के अधीन लाने के लिए अधिकारी नियुक्त किए गए जो करों के एकत्रित करने की देखभाल भी करते थे। कामाकूरा बाकुफू के किसानों की दिशा सुधारने करने के लिए नए कानून लागू किये गये जो कि जोयी कानून कहलाते थे।

इन कानूनों के द्वारा निष्पक्ष रूप से झगड़ों को सुलझाने के जो प्रयास किये गए उनसे किसानों को कुछ राहत मिली। किसी न किसी रूप में ये कानून 19वीं शताब्दी तक लागू रहे।

परन्तु किसान की जिन्दगी एक पुराने ढर्रे पर ही चलती रही। करों की दर उपज का 2/3 भाग होने के कारण ऊंची बनी रही। चावल ऊंची कीमत के कारण साधारण किसान की पहुंच से बाहर था। किसान के पास कोई पारिवारिक नाम नहीं था। उसे *हयाकुशो* कहा जाता था जिसका मतलब सैकड़ों नामों से पुकारा जाने वाला व्यक्ति होता है। किसानों का मुख्य आहार गेहूं या बाजरा था। 14वीं शताब्दी से *सोबा* (काला गेहूं) भी उसके आहार में शामिल हो गया । इस समय नावें भी पुराने ढंग की थी और यात्रा खतरों से परिपूर्ण थी।

894 में चीन के साथ व्यापार पर जो प्रतिबन्ध लगाए गए थे वे इस काल में उठा लिए गए और तटीय व्यापार पुनः प्रारम्भ हुआ। परन्तु जापानियों के पास ऐसे जहाज नहीं थे जो समुद्री यात्रा कर सके अतः चीनी जहाजों में ही सामान लाया जाता था। वास्तव में कामाकूरा काल में जापान चीन से रेशम, जरी, इत्र, तांबे के सिक्के और चाय जैसे वस्तुएं मंगवाता था और बदले में सोना, तलवारें, पारा, तारकोल, रंगीन बर्तन और परदे चीन भेजे जाते थे। जापान से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं की इस लिस्ट से पता चलता है कि इस काल में जापानी हस्तशिल्प की वस्तुएं, विशेष तौर से वहां बनी तलवारें, उच्च श्रेणी की थीं। तलवारों का उपयोग केवल योद्धाओं के लिये ही नहीं था। शिन्तो धर्म के अनुष्ठानों में भी उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। 10वीं शताब्दी के अन्त तक प्रसिद्ध तलवार बनाने वाले तलवार की धार पर अपना नाम भी गोदने लगे थे। इसके अतिरिक्त कई अन्य प्रकार के विशिष्ट अस्त्र भी बनाए जाते थे। जैसे पतले लोहे की प्लेटों को रंगीन डोरी से बांधकर एक शस्त्र बनाया जाता था। लाख और रोगन का प्रयोग अब केवल छोटी छोटी वस्तुओं के बनाए जाने में ही न होकर बड़े-बड़े भवनों और स्मारकों में होने लगा। 10वीं शताब्दी में इसमें एक नवीन तकनीक अपनाई गई जिसमें सोने और चांदी का पाउडर गीले रोगन पर छिड़का जाता था। उसके बाद रोगन की एक और परत चढ़ाई जाती थी और डिजाइन उभर कर आ जाता था। इस प्रकार की क्षमताओं के विकास के कारण जापानी उत्पाद चीन में और अधिक आकर्षण का केन्द्र बने। अन्ततः तांबे के सिक्कों का आयात यह संकेत करता है कि आन्तरिक व्यापार में भी वृद्धि हो रही थी और मुद्रा के अधिक इस्तेमाल की आवश्यकता थी।

जीवन इस समय सादा और कठोर था और यह बात योद्धा और शासक वर्गों पर भी लागू होती है। यद्यपि इनके घर अधिक वैभवशाली नहीं थे परन्तु उनका निर्माण इस प्रकार किया जाता था उनके द्वारा रखे गए भाड़े के योद्धा वहां रह सकें और तीरंदाजी व घुड़सवारी आदि कर सकें। घरों में आग तारकोल से जलाई जाती थी और प्रकाश के लिए लैम्पों का प्रयोग होता था। टाटामी चटाई जिसका कि जापान में आजकल सर्वत्र प्रयोग होता है 15वीं शताब्दी में ही प्रचलन में आई। जापानियों ने गरम या भाप से स्नान की प्रथा का विकास किया था। इस प्रकार के स्नानागार या तो धनिकों के घरों में थे या बड़े-बड़े मन्दिरों में।

4.8.3 देश युद्ध के दौर में

कामाकूरा बाकुफू 1333 वर्ष में नष्ट हो गई। इसके पश्चात् 1568 तक अरहीकाशा शासन रहा और उसकी समाप्ति ओडा नोबोनागा के क्योतो में प्रवेश से हुई। 1467 से 1568 के मध्य का काल *सोगोकु* के नाम से जाना जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है देश युद्ध के दौर में। लेकिन महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अस्थिर स्थितियों और लगातार युद्ध के बावजूद इस काल में कृषि उत्पादन में सुधार हुआ।

कृषि उत्पादन तकनीकों में तीव्रता आई और खाद के प्रयोग में बढ़ोत्तरी हुई। कृषि औजारों में सुधार हुआ

तथा कानसाई और कानतो क्षेत्रों के मध्य दो फसली खेती होने लगी। कुछ नई फसलों का भी उत्पादन प्रारम्भ हुआ। उदाहरण के लिए हिन्द-चीन के इलाके से जौ की फसल जापान लाई गई। जैन मठों ने अपनी भूमि पर चाय उगानी प्रारम्भ कर दी थी क्योंकि वे अनुष्ठान के रूप में चाय समारोह करते थे। साधारण लोगों के कपड़े बनाने में सन (Hemp) के धागों का प्रयोग होता था जबकि कुलीन रेशम के वस्त्र पहनते थे।

सोने, चांदी और काँसे को पहले ही खदानों से निकाला जा रहा था परन्तु अब चीन और कोरिया से निपुण धातु गलाने वाले कारीगर बुलाए गए। उनकी निपुणता के कारण जापानी वस्तुओं की गुणवत्ता में वृद्धि हुई। इसी प्रकार आगे चलकर मिंग कालीन चीन से जुलाहे और कोरिया से कुम्हार लाए गए।

आन्तरिक व्यापार में वृद्धि के कारण बाजारों का विस्तार हुआ। ये बाजार बड़े मन्दिरों के बाहर या *दाम्यो* के किलों के बाहर निश्चित दिनों पर (जैसे महीने के चौथे, चौदहवें या चौबीसवें दिन) लगते थे। इसी के साथ थोक व्यापार का भी विकास हुआ। थोक व्यापारी *बान्या* कहलाते थे और ये महाजनी और सट्टे का काम भी करते थे। इस काल में व्यापारियों ने शिल्पसंघ (*ज़ा*) भी बनाने प्रारंभ कर दिये थे। इन शिल्पसंघों को कुछ करों से छूट प्राप्त थी और ये अपने तंत्र भी स्थापित करने लगे थे। अक्सर कोई मन्दिर या कुलीन उनके संरक्षक के रूप में रहता था।

आवागमन में अभी भी कठिनाइयां थीं परन्तु नदी और तटीय यातायात में सुधार अवश्य हुआ। परिणामस्वरूप तट पर ओटसू, स्वाउगा, हकाता जैसे शहरों का विकास हुआ। 10वीं शताब्दी में जापान की आबादी 10 लाख के करीब थी और 17वीं शताब्दी तक ये बढ़कर 18 लाख हो गई थी। यद्यपि ये आंकड़े अन्तरिम ही हैं परन्तु ये विकास की दिशा के सूचक हैं।

13वीं शताब्दी में मंगोलों ने जापान पर आक्रमण का प्रयास किया था जिसके कारण चीन से व्यापार को धक्का लगा था। 1542 में वह पुनः प्रारम्भ किया गया। लेकिन चीन के मिंग शासकों से परेशानियों के कारण 1548 में व्यापार पुनः रोक दिया गया। वास्तव में मिंग शासक यह चाहते थे कि जापानी अपने तट पर सक्रिय समुद्री डाकुओं का सफाया करे और जहाजों की संख्या पर भी अंकुश लगाए।

1585 में पुर्तगालियों ने मकाओ में एक अड्डा खोला और यहाँ से उन्होंने जापान से व्यापार प्रारम्भ किया। शुरू में व्यापार की कड़ी इसाई मिशनरियों से जुड़ी थी और जो लाभ होता था उससे मिशनरियों का खर्चा चलता था। पुर्तगाली व्यापारी जापान में चीनी रेशम और बन्दूकें लाते थे। परन्तु मिशनरी गतिविधियों से जापान में कठिनाइयां उत्पन्न होने लगीं। इसी के साथ अंग्रेजी और डच व्यापारियों से भी प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हुई। 27 जनवरी 1614 के दिन तोकुगावा कियोम ने जापान में इसाई धर्म पर प्रतिबन्ध लगा दिया और 1616 में विदेशी व्यापार केवल नागासाकी और हीरोटो शहरों तक सीमित कर दिया गया। 1635 में नोगास्बा के पास एक कृत्रिम द्वीप, देशिमा, बनाया गया और डच लोगों को वहां बसने की आज्ञा दे दी गई। 1640 तक आते-आते जापान ने पाश्चात्य जगत से अपने सम्बन्ध तोड़ लिए और लगभग दो शताब्दियों तक अलगाव की नीति अपनाई।

बोध प्रश्न 3

1) लगभग 10 पंक्तियों में जापानी अर्थव्यवस्था पर चीन के प्रभाव की चर्चा करें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) निम्न में से कौन से वक्तव्य सही या गलत हैं ? (√) या (x) का चिन्ह लगाएं।
   i) प्रारम्भिक जापानी समाज मातृसत्तात्मक था।
   ii) सम्राट का *शोइन* भूमि पर कोई नियंत्रण नहीं था।
   iii) 894 में चीन के साथ व्यापार रोक दिया गया।
   iv) आन्तरिक व्यापार से बाजारों का विस्तार हुआ।
   v) पुर्तगालियों ने अपना अड्डा इदो में बनाया।

4.9 तोकुगोवा काल की अर्थव्यवस्था

तोकुगावा काल की ओर संक्रमण के दौरान पिछले काल से कुछ निरन्तरताएं बनी रही जबकि कुछ क्षेत्रों में नए मोड़ भी आए। केन्द्रित नौकरशाही के आधीन एक लम्बे काल तक जो राजनीतिक स्थायित्व बना रहा उससे आर्थिक विकास ही नहीं हुआ वरन सामाजिक परिवर्तन भी हुए। अलगाव की नीति अपनाने के कारण आर्थिक जीवन में विदेशी व्यापार की भूमिका प्रायः नगण्य ही रही। परन्तु एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था में, जिसमें कि अधीनस्थ समुराइयों को शहरों में रहना पड़ता था और दाम्यो को इदो में बन्धक छोड़ने पड़ते थे, शहरीकरण का विकास हुआ। जबकि पहले जापान में मुख्यतः कृषि समाज ही था। शहरी केन्द्रों के विकास के कारण व्यापार और हस्तशिल्प में वृद्धि हुई। मुद्रा की महत्त्वपूर्ण भूमिका के कारण सामाजिक सम्बन्धों में भी परिवर्तन आए। उदाहरण के लिए वंशानुगत प्रतिष्ठा धन-दौलत के सम्मुख मान खोने लगी। वास्तव में ये परिवर्तन तोकुगावा काल की आर्थिक और सामाजिक स्थितियों में होने वाले उभार और गतिशीलता के द्योतक थे।

यदि हम पहले के काल की तुलना करें तो तोकुगावा काल में हुआ शहरीकरण एक उल्लेखनीय प्रवृत्ति थी। 18वीं शताब्दी में राजधानी इदों की आबादी एक लाख से ऊपर थी और व्यापारिक केन्द्र ओसाका की 50,000 दाम्यो द्वारा वैकल्पिक उपस्थिति की प्रथा के कारण राजमार्गों पर 200 से अधिक छोटे शहर बस गए। इस काल में लगभग 10 क्षेत्रीय नगर ऐसे थे जिनकी आबादी 40 से 50 हजार के बीच थी। शोधकों की ऐसी धारणा है कि इस काल में जापान की लगभग 15 प्रतिशत आबादी (यानि लगभग 4 लाख लोग) शहरों में रहती थी। यद्यपि सामुराइ शासक वर्ग से जुड़े थे परन्तु उनकी आर्थिक स्थिति गिरती जा रही थी। वास्तव में उनको जो भत्ते प्राप्त होते थे उनकी क्रय शक्ति कम हो रही थी।

शहरों में आबादी के केन्द्रित होने के परिणामस्वरूप वाणिज्य और व्यापार में वृद्धि हुई। यद्यपि व्यापारियों का सामाजिक स्तर हीन था तथापि वे अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे। इंग्लैण्ड और फ्रांस के व्यापारी अधिकांशतः विदेशी व्यापार से अपनी शक्ति का प्रसार कर रहे थे परन्तु जापानी व्यापारियों की शक्ति विशुद्धतः आन्तरिक व्यापार पर निर्भर थी। इसके अतिरिक्त उनकी आर्थिक स्थिति भी तोकुगावा शासकों द्वारा दिये गये विशेषाधिकारों पर निर्भर थी।

प्रारम्भिक व्यापारिक घरानों जैसे, कि कोनिकेया जेनीतन आदि, ने अपनी सम्पत्ति वित्तीय एजेण्टों का कार्य और गोदामों को चलाकर प्राप्त की थी। इन गोदामों में वे दाम्यो का चावल रखते और बेचते थे। जैसे-जैसे दाम्यो की आर्थिक कठिनाइयां बढ़ीं व्यापारियों की महाजनी गतिविधियाँ महत्त्वपूर्ण होती चली गईं। यह प्रायः उन व्यापारियों द्वारा किया जा रहा था जो पहले धनी किसान थे और साके (चावल की शराब) बनाते थे। 1670 में तोकुगावा ने इन व्यापारियों को बैकिंग, साहुकारिता और वित्तीय कार्यों पर एकाधिकार प्रदान किया। इनका भविष्य वास्तव में पूरी तरह बाकुफू से जुड़ा हुआ था और इसलिए वे 1868 के पुनर्स्थापन के बाद अपनी स्थिति खो बैठे। उदाहरण के लिए सानकिन-कोताई व्यवस्था का अन्त इसके बाद का सबसे पहला निर्देशक बना कि वे अपना प्रभुत्व खोने लगे थे।

17वीं शताब्दी के अन्त और 18वीं शताब्दी के प्रारम्भ में विभिन्न क्षेत्रों के परस्पर व्यापार में उन्नति हुई और इससे परिवहन व्यवस्था में भी सुधार हुए। उत्पादकता में वृद्धि ने क्षेत्रीय विशिष्टीकरण को बढ़ावा दिया। मितसुई जैसे व्यापारिक घरानों ने क्षेत्रों की कुल कपड़े की उत्पादकता को ठेके पर लेना प्रारम्भ कर दिया। ऐसा वे उत्पादकों को पेशगी पूंजी देकर करते थे और उपभोक्ताओं को सीधा बेचने के लिए उन्होंने दुकानें खोलीं। 1680 और 1720 के मध्य इस प्रकार के व्यापारियों ने क्षेत्रीय व्यापार के विकास में विशेष सहायता दी।

1800 वर्ष आते-आते स्थानीय व्यापार का अत्यधिक विस्तार हुआ और धनी किसानों से बने व्यापारियों ने

इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे कई दाम्यो, जो कि आर्थिक संकट की स्थिति में थे, ऐसे उद्यमियों की सहायता लेने लगे। उदाहरण के लिए 1861 में तोतोरी हान के एक ग्रामीण व्यापारी को रेशम और रेशम के कीड़ों को बाजार में बेचने का प्रभारी बनाया गया। उसको दो तलवारें टांगने का भी विशेषाधिकार दिया गया जिसकी आज्ञा केवल सामुराइ को ही थी।

बाकुफू व्यापारियों पर नियंत्रण रखती थी परन्तु इसमें उसे सदैव सफलता नहीं मिलती थी। लेकिन बाकुफू ने राज्य और उद्योगों के मध्य संबंध स्थापित करने की जो प्रभावशाली भूमिका अदा की उसने आगे चलकर जापान के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। 18वीं शताब्दी तक व्यापारीकरण व्यापक रूप ले चुका था और बाकुफू को 1/3 कृषि कर मुद्रा के रूप में मिलने लगा था।

मुद्रा नीति के अनुसार केवल तोकुगावा बाकूफू ही सिक्के ढाल सकती थी। परन्तु दाम्यो को स्थानीय इस्तेमाल के लिए कागजी मुद्रा छापने का अधिकार प्राप्त था। सिक्कों की कीमत उनके धातु मूल्य पर आधारित न होकर उनको दिये गए मूल्य पर तय होती थी।

इस काल में ग्रामीण आबादी में अधिकांश भूमिहीन मजदूर और गरीब किसान थे। शहरों के विकास के कारण वहाँ मजदूरों की कमी महसूस की गई। इससे अनेक गरीब ग्रामीण शहरों में जा कर बसने लगे। कृषि तकनीक और औजारों में सुधार, तथा व्यापारिक गतिविधियों के विकास से अनेक क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था में गतिशीलता आई। परन्तु इससे जो लाभ हुआ उसका फल सबको बराबर न मिलने से सामाजिक सन्तुलन भी बिगड़ा। जमींदारों ने उत्पादकता में हुए लाभ को तेल बनाने, साके बनाने, कपड़ा बनाने और साहूकारी जैसे उद्योगों में लगाया। ग्रामीण समाज में हो रहे परिवर्तनों और 1780 व 1830 के दशकों में फैले आकालों के कारण किसान विद्रोहों ने तीव्रता पकड़ी। 17वीं शताब्दी तो लगभग शांतिपूर्ण ही बीती थी पर 1750 के बाद से लगभग 6 विद्रोह प्रति वर्ष की औसत रही। अक्सर ये विद्रोह हिंसात्मक होते थे और न केवल सरकार वरन् ग्रामीण धनिकों के विरुद्ध भी होते थे। कई विद्रोह सदाचारी रूप लेने लगे थे। यानि कि एक ऐसी न्यायसंगत व्यवस्था की मांग करने लगे थे जो उनकी समझ से बीते हुए काल में मौजूद थी।

गावों में गरीबी के कारणों को लेकर विद्वानों में परस्पर मतभेद हैं। उदाहरण के लिए एन्दो सीइची के अनुसार यदि तोकुगावा अपनी आर्थिक समस्याओं को किसानों पर लाद देते तो किसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ता। जे. डब्ल्यू हाल यह मनाते हैं कि यह विकास और वैभव का काल था और गांवों में गरीबी वितरण में असमानता और क्षेत्रीय असंतुलनों के कारण थी।

अर्थव्यवस्था में विकास के कारण आबादी का जो कूच शहरों की ओर हुआ उससे सामाजिक परिवर्तन भी आए जैसे कई सामुराइ जो अपने निश्चित भत्तों के कारण क्रय शक्ति खा रहे थे, निरंतर गरीबी की ओर बढ़ने लगे। इससे बचने के लिए उन्होंने धनी व्यापारियों से विवाह-सम्बन्ध बनाने प्रारम्भ कर दिए। इसी प्रकार अधिक विकसित क्षेत्रों में वर्गीकरण बढ़ता गया जिससे विद्रोह तक हुए। लेकिन हमें यह ध्यान रखना होगा कि इस काल में कुछ अधिक आधुनिक संस्थाएं बनीं और नए तौर तरीकों का उद्भव हुआ। इसी सब के कारण आगे जाकर जापान का विकास सम्भव हुआ।

बोध प्रश्न 4

1) तोकुगावा काल में शहरीकरण की प्रक्रिया की व्याख्या 10 पंक्तियों में कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) निम्न में से कौन से वक्तव्य सही या गलत हैं। √ या × का चिन्ह लगाएं :

   i) 1670 में व्यापारियों को बैंकिंग का एकाधिकार दिया गया।

   ii) बाकूफू व्यापारियों पर कोई नियंत्रण नहीं रखती थी।

   iii) स्थानीय इस्तेमाल के लिए दाम्यो कागजी मुद्रा छाप सकते थे।

   iv) शहरों के विकास से वहां मजदूरों की कमी महसूस हुई।

   v) धनी किसानों में से बने व्यापारियों ने व्यापार में कोई भूमिका अदा नहीं की।

4.10 सारांश

इस इकाई में हमने इस बात की विवेचना की कि किस प्रकार चीन और जापान में आर्थिक विकास ने दिशाएं लीं। एक लम्बी अवधि के दौरान, कृषि, व्यापार और हस्तशिल्प आदि ने इन देशों की अर्थव्यवस्थाओं को संवारने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। अलग-अलग समय पर अनेक नवीनताएं भी आईं। चीन में कृषि और हस्तशिल्प के क्षेत्र में अनेक किताबें भी लिखी गईं। परन्तु वहां कई महत्त्वपूर्ण किसान विद्रोह भी हुए और अक्सर खान मजदूर और व्यापारियों ने भी सरकारी नियंत्रणों के विरुद्ध आवाज उठाई। यद्यपि दोनों ही देशों में पूंजीवाद विकास के चिह्न प्रस्फुटित हुए, विभिन्न कारणों की वजह से पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के विकास में बाधाएं आईं।

4.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपके उत्तर में कृषि क्षेत्र में हुए सुधार जैसे नए प्रकार के हल का आना, कृषि-सुधार सम्बन्धी पुस्तकों का छपना आदि सम्मिलित होना चाहिए। देखें भाग 4.3

2) i) × ii) √ iii) √ iv) √ v) √

3) तांग साई व ये-त्सुंग लीयु आदि के नेतृत्व में हुए विद्रोहों की चर्चा कीजिए। देखें भाग 4.3

बोध प्रश्न 2

1) यह कताई व बुनाई के क्षेत्र में हुआ। अपने उत्तर को भाग 4.5 पर आधारित करें।

2) देखें भाग 4.5

3) देखें भाग 4.7

बोध प्रश्न 3

1) देखें उपभाग 4.8.1

2) i) × ii) × iii) √ iv) √ v) ×

बोध प्रश्न 4

1) देखें भाग 4.9

2) i) √ ii) × iii) √ iv) √ v) ×